इकाई 10 भाषा समस्याओं की पहचान

संरचना

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 उच्चारण त्रुटियाँ और वाक् प्रशिक्षण

- 10.3.1 वाक् अवयव
- 10.3.2 ध्वनि के प्रकार
- 10.3.3 उच्चारण त्रुटियाँ
- 10.3.4 वाक् प्रशिक्षण

10.4 पठन त्रुटियाँ और उपचारी शिक्षण

10.5 लेखन त्रुटियाँ और उपचारी शिक्षण

10.6 सारांश

10.7 इकाई के अंत में अभ्यास

10.8 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

10.1 प्रस्तावना

भाषा अधिगम के लिए शिक्षार्थियों से शब्दों के शुद्ध उच्चारण (वाक् कौशल), शुद्ध लिखने (लेखन कौशल) और प्रभावी रूप से पढ़ने एवं अर्थग्रहण की (पठन कौशल) आशा की जाती है। आप जानते ही हैं कि हमने पिछली इकाई में प्रत्येक भाषा कौशल के लिए उपयुक्त क्रियाकलापों का विस्तृत विवेचन किया था। आप यह भी जानते हैं कि आपके शिक्षार्थियों के स्तर में तथा भाषा अधिगम की समस्याओं की प्रकृति में विभिन्नता होती है। शिक्षार्थी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं और भाषा कौशलों पर अधिकार पाने के लिए अपेक्षित कालावधि भी अलग-अलग होती है।

आप इस तथ्य से सुपरिचित हैं कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और भाषा अधिगम के संबंध में तो ऐसा और भी अधिक होता है। ये समस्याएँ अधिकतर भाषा अधिगम के दौरान शिक्षार्थियों द्वारा की गयी त्रुटियों से संबंधित होती है। सामान्यत: इन त्रुटियों के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं :

- भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रति प्रभावी उपागम का अभाव।
- बोलने, पढ़ने और लिखने के क्षेत्र में पर्याप्त अभ्यास का अभाव।
- भाषा अधिगम के लिए शिक्षार्थियों में अभिप्रेरण का अभाव।
- अन्य भाषा के अधिगम में मातृभाषा का हस्तक्षेप।

बच्चा पढ़ना व लिखना सीखने से पहले बोलना सीखता है। बोलने के आदर्श रूप को सुनने से बच्चा मानक भाषा बोलने में सक्षम होता है। अत: जैसा कि हमने पहले प्रतिपादित किया है, प्रभावी भाषा अधिगम के लिए इन दोनों क्रियाओं (सुनना और बोलना) पर सम्यक् ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षक होने के नाते आपको सदैव शिक्षार्थियों में भिन्नताओं को पहचानना चाहिए और उनमें अधिगम को प्रोत्साहन देने के लिए उपर्युक्त युक्तियाँ अपनानी चाहिए। इस प्रकार की भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी कारकों को निम्नलिखित रूपों में व्यक्त किया जा सकता है :

i) **बौद्धिक** : शिक्षार्थियों की बौद्धिक क्षमता में अन्तर होता है। मातृभाषा की अपेक्षा अन्य भाषा अधिगम की स्थिति में कुछ शिक्षार्थियों में पर्याप्त बौद्धिक क्षमता का अभाव हो सकता है।

ii) **शारीरिक** : किसी वस्तु को अधिक या कम दूरी से देखने (दृष्टिगत समस्या) में भी शिक्षार्थियों में भिन्नता हो सकती है। कुछ शिक्षार्थियों को सुनने में कठिनाई हो सकती है। कुछ शिक्षार्थियों में हकलाने की समस्या हो सकती है, जैसे कुछ शिक्षार्थी 'वह' शब्द के उच्चारण के स्थान पर '-व - वह' उच्चारण कर सकते हैं।

iii) **मनोवैज्ञानिक** : शिक्षार्थियों में विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हो सकती हैं। ये समस्याएँ संकोच, भीरुता या अभिप्रेरण के अभाव से संबंधित होती हैं।

iv) **घरेलू परिवेश** : भाषा के अभ्यास (सुनने व बोलने) के लिए सभी शिक्षार्थियों को एक ही प्रकार का परिवेश नहीं मिल पाता, कुछ को अच्छा परिवेश मिल जाता है यथा-कुछ अभिभावक बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और जो कुछ वह कहना चाहता है उसे बोलने में सहायता करते हैं या लिखने में उसका मार्गदर्शन करते हैं। किन्तु अन्य शिक्षार्थियों को शायद इस तरह का परिवेश नहीं मिल पाए। कुछ शिक्षार्थियों को अपने बड़े भाई या बहनों से सहायता मिल सकती है जबकि अन्य शिक्षार्थी इस प्रकार के मार्गदर्शन से वंचित रह सकते हैं।

v) **विद्यालयी परिवेश** : दोषपूर्ण शिक्षण-सामग्री और शिक्षकों को शिक्षार्थियों के प्रति सहानुभूतिहीन रवैया जैसी कुछ समस्याओं का संबंध विद्यालय से होता है। शिक्षार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं का पता लगाने और समुचित कौशलों के विकास में उनकी सहायता के लिए विद्यालय में अच्छे परिवेश का होना आवश्यक है। प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय समुचित शिक्षण सहायता साधनों से संपन्न होना चाहिए।

भाषा शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम में उपर्युक्त सभी तत्वों का ध्यान रखना होता है। इस संबंध में कुछ अन्य सुझाव हैं - अधिक बुद्धिमान शिक्षार्थियों को कम बुद्धिमान शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन के अवसर देना (सामूहिक क्रियाकलाप), नेत्र विशेषज्ञ और वाक् चिकित्सक से परामर्श प्राप्त करने में शिक्षार्थियों की सहायता करना और विद्यालय में उचित परिवेश की व्यवस्था करना।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि आप :

- शिक्षार्थियों की भाषा समस्याओं का पता लगा सकें;
- उच्चारण त्रुटियों के कारणों का पता लगा सकें;
- वाक् प्रक्रिया में सम्मिलित विभिन्न अवयवों की सूची बना सकें;
- शब्दों के शुद्ध उच्चारण की महत्ता को स्पष्ट कर सकें;
- पठन व लेखन त्रुटियों के कारणों का पता लगा सकें; और
- उच्चारण, पठन और लेखन की त्रुटियों को दूर करने में उपचारी शिक्षण की भूमिका का वर्णन कर सकें।

10.3 उच्चारण त्रुटियाँ और वाक् प्रशिक्षण

अच्छी बोली या अच्छे ढंग से बोलना शब्दों के उचित उच्चारण पर निर्भर करता है। जब कभी हम उच्चारण करते हैं तब मुख से एक ध्वनि उत्पन्न करते हैं। बोलने में बहुत से अवयव सम्मिलित होते हैं, जिन्हें वाक् अवयव कहा जाता है। जब हम बोलते हैं तो गले, मुँह व नाक के माध्यम से हवा गुजरती है। अच्छे ढंग से बोलने के लिए उचित रूप से श्वास लेना और उचित ध्वनि निकालने के लिए श्वास को स्थिर रखना आवश्यक है।

10.3.1 वाक् अवयव

आइए हम विचार करें कि हम ध्वनि कैसे उत्पन्न करते हैं। जब हम श्वास लेते हैं तो ध्वनि उत्पन्न करते हैं। श्वास लेने में डायाफ्राम नामक अवयव की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। डायाफ्राम फेफड़ों के नीचे और कमर के ऊपर स्थित एक मांसपेशी होती है। जब हम साँस लेते हैं तो हवा फेफड़ों में पहुंचती है और डायाफ्राम क्षैतिजीय रूप से नीचे चला जाता है। जब हम साँस छोड़ते हैं तो फेफड़ों से हवा आती है और इसलिए डायाफ्राम ऊपर आ जाता है। डायाफ्राम की इस क्रिया के कारण श्वसन होता है। आपने यह अनुभव किया होगा कि जब आप कुछ मीटर दौड़ते हैं और इसके शीघ्र पश्चात् कुछ बोलना चाहते हैं तो आप सामान्य तरीके से आवाज उत्पन्न करने में असफल होते हैं। क्यों? ऐसा इसलिए होता है कि दौड़ने से साँस फूल जाती है और आप सामान्य आवाज़ उत्पन्न करने में असफल रहते हैं। इस प्रकार, उचित रूप से उचित समय पर श्वास लेने से और श्वसन के ऊपर नियंत्रण रखने से हम ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

ऐसे कुछ अन्य अवयव भी हैं जो स्वर, व्यंजन या शब्द के उच्चारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये अवयव श्वास नली, वाक् तंतु, जिह्वा, कठोर तालु, कोमल तालु, दन्त उद्रेख और अनुनासिक रन्ध्र हैं। आइये नीचे दिए अवयवों पर ध्यान दें और बोलने में प्रयुक्त अवयवों को पहचानें।

वाक् अवयव

अनुनासिक रन्ध्र

कठोर तालु

दन्त उद्रेख

कोमल तालु

जिह्वा की नोक

जिह्वा का अग्र भाग

जिह्वाग्र

जिह्वा का मध्य भाग

जिह्वा का पिछला भाग

होंठ

वाक् तंतु

श्वास नली

आहार मार्ग

श्वास प्रक्रिया के बिना बोल पाना ज़रूरी है। यदि आप नाक, मुँह या दोनों के माध्यम से साँस लेते हैं आप ध्वनि तो निकाल सकते हैं, लेकिन इस तरह की ध्वनि को बोलना नहीं माना जा सकता सकता क्योंकि इस प्रकार की ध्वनियाँ निरर्थक होती हैं और कुछ भी संप्रेषित नहीं करती है।

जब हम साँस छोड़ते हैं तो हवा फेफड़ों से श्वास नली के माध्यम से गले तक आती है। तब हवा वाक् तंतुओं के संपर्क में आती है। ये वाक् तंतु अंग्रेजी के अक्षर 'वी' (V) आकार की कठोर संरचना के बिल्कुल पीछे स्थित होते हैं। गले के अग्र भाग के बीच में अंगुलियों से दबाव डालकर आप इस 'वी' आकार की कठोर संरचना का अनुभव कर सकते हैं। संभवत: दर्पण (आइने) के माध्यम से भी इसे देखा जा सकता हो। जब हवा वाक् तंतुओं के संपर्क में आती है तो इनमें स्पन्दन होना शुरू हो जाता है (आगे व पीछे की तरफ़)। जब ये आगे की ओर हिलते हैं और इनके बीच से हवा निर्बाध रूप से गुजर जाती है, तो ध्वनि उत्पन्न होती है। जब ये पीछे जाते हैं तो ध्वनि नहीं होती। एक बार जब ध्वनि उत्पन्न हो जाती है तब हम कोई भी स्वर और कुछ व्यंजन बोलने लगते हैं। इन स्वरों और व्यंजनों के विवरण पर बाद में चर्चा की जाएगी।

वाक् तंतु में से गुज़रने के पश्चात् हवा ग्रसनी (फेरिंक्स) नामक छिद्र में पहुंचती है, जो जिह्वा के बिल्कुल पीछे स्थित होता है। अब हवा मुख या नाक से बाहर निकलती है। मुख या नाक से निकलने वाली हवा को नियंत्रित करने के लिए हमारे मुँह के अन्दर कोमल तालु होता है। आप इस कोमल तालु को देख सकते हैं। इसकी आकृति लगभग जिह्वा की तरह होती है। (कुछ लोग इसे छोटी जिह्वा भी कहते हैं) दर्पण के सामने केवल अपना मुँह खोलें। कठोर तालु के अन्त में आपको जिह्वा की आकृति की स्थूल व छोटी संरचना दिखाई देगी। यह और कुछ नहीं बल्कि कोमल तालु है। जब कोमल तालु ढीला होकर नीचे लटकता है तब हवा नाक से पार हो जाती है और हम 'ङ' 'न', 'म', 'अ' (जैसे अंग) जैसी कुछ ध्वनियाँ उत्पन्न करते हैं। इन ध्वनियों को अनुनासिक ध्वनि कहा जाता है।

जब कोमल तालु मुँह से हवा को बाहर आने देता है तब मुख से ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। इन ध्वनियों को विभिन्न तरीकों से पुन: नियंत्रित या नियमित किया जा सकता है। इनको होंठ, जिह्वा के विभिन्न अवयव, कठोर तालु (मुख का कठोर तालु) और दंत उद्रेख द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

अब आप ध्वनि उत्पन्न करने की प्रक्रिया में सम्मिलित विभिन्न अवयवों की महत्ता का अनुभव कर चुके होंगे। विभिन्न ध्वनियों को नियमित या नियंत्रित करने का ज्ञान आपको वर्णमाला (स्वर या व्यंजन) और विभिन्न शब्दों का उचित उच्चारण करने में सहायता करेगा। आपका अनुकरण करने पर छोटे बच्चे भी उचित प्रकार से उच्चारण करना प्रारंभ कर सकेंगे।

10.3.2 ध्वनि के प्रकार

जैसा कि आप जानते हैं कि बोलना हमारे द्वारा उत्पन्न ध्वनियों पर निर्भर करता है। इन ध्वनियों को व्यापक रूप से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है - (i) स्वर और (ii) व्यंजन। जब वाक् तंतु स्पन्दित होते हैं और उनके बीच में से हवा आसानी से गुज़र जाती है तब स्वर ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। अन्य सभी ध्वनियाँ व्यंजन ध्वनियाँ होती हैं जिनमें हवा अवरूद्ध होती है अथवा मुख के माध्यम से नहीं गुज़रती है। जब एक ध्वनि एक स्वर से आरंभ होकर अन्य स्वर की दिशा में जाती है या वहाँ पूर्ण होती है तो उस ध्वनि को संयुक्त स्वर कहते हैं।

हिन्दी में ग्यारह वर्ण स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ हैं लेकिन आज हिन्दी में बारह स्वर वर्णों का प्रयोग हो रहा है। संयुक्त स्वर वे ध्वनियाँ होती हैं जिनके उच्चारण में जिह्वा विशिष्ट स्वर के उच्चारण के लिए अपेक्षित स्थिति की दिशा में चली जाती है। नीचे दिए गए चार्ट से आपको स्वर, व्यंजन के उच्चारण के लिए वाक् अवयवों की स्थिति समझने में सहायता मिलेगी और स्वरों, व्यंजनों इत्यादि के उच्चारण में शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन करने में भी।

दन्त (त वर्ग, ल्, स्) तालु (इ, ई, च वर्ग, य, श)

मूर्धा (ट वर्ग, र्, ष्, ऋ)

ओष्ठ (उ, ऊ, प वर्ग)

कण्ठ (अ, आ, क वर्ग, ह)

उच्चारण स्थानों की पूरी तालिका इस प्रकार है -

स्थान	वर्ण	नाम
कण्ठ	अ आ क् ख् ग् घ् ङ् ह्	ये वर्ण कण्ठ्य कहलाते हैं।
तालु	इ ई च् छ् ज् झ् ञ य श्	ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।
मूर्धा	ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्	ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।
दन्त	त् थ् द् ध् न् ल् स्	ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।
ओष्ठ	उ ऊ प् फ् ब् भ् म्	ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।
कण्ठतालु	ए ऐ	ये वर्ण कण्ठ-तालव्य कहलाते हैं।
कण्ठोष्ठ	ओ औ	ये वर्ण कण्ठोष्ठ्य कहलाते हैं।
दन्तोष्ठ	व्	यह वर्ण दन्तोष्ठ्य कहलाते हैं।
नासिका	ङ् ञ् ण् न् म्	ये वर्ण नासिक्य कहलाते हैं।

10.3.3 उच्चारण त्रुटियाँ

आपको विदित है कि बोलना पूरी तरह से केवल ध्वनियों पर निर्भर करता है और यदि ध्वनियों का उच्चारण उचित रूप से नहीं होता तो समस्या उत्पन्न हो जाती है। आइये, हिन्दी में पाई जाने वाली कुछ सामान्य उच्चारण त्रुटियों पर विचार करें। नीचे कुछ शब्दों का समूह दिया गया है जो दोषपूर्ण उच्चारण के कारण भ्रम में डाल सकता है।

ओर	और	इन शब्द समूहों का अशुद्ध उच्चारण करने से इनके अर्थ बदल जाते हैं और भ्रम उत्पन्न होता है। ऐसे अनेक शब्द हैं।
पक्का	पका	
बही	वही	
कोष	कोस	
कुल	कूल	

10.3.4 वाक् प्रशिक्षण

अच्छे वाक् प्रशिक्षण से भाषा अधिगम बेहतर होता है। आपको एकदम प्रारंभ से ही वाक् प्रशिक्षण शुरू कर देना चाहिए। शिक्षार्थियों को स्वयं की प्रगति में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करें। शिक्षार्थियों को प्रारंभ में 'धन्यवाद', 'माफ़ कीजिए', 'नमस्ते', 'क्या मैं आ सकता हूँ', जैसे शब्दों/कथनों के प्रयोग के अवसर देना अच्छा होगा। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

वाक् प्रशिक्षण कार्य का आरंभ निम्नलिखित अभ्यासों से करना चाहिए :

- विभिन्न ध्वनियों के उच्चारण के लिए वाक् अवयवों का उचित प्रयोग।
- आपके द्वारा उचित उच्चारण का निदर्शन।
- जिह्वा और होंठ की सही स्थिति सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक अभ्यास।
- वैयक्तिक स्तर पर त्रुटियों का निदान और शुद्ध उच्चारण के लिए वैयक्तिक अभ्यास।
- त्रुटियों के निदान के लिए प्रत्येक बच्चे को लगभग एक मिनट के लिए दो या तीन संयुक्त वाक्यों को स्पष्टत: बोलने का अवसर प्रदान करना।

- वाक् प्रशिक्षण के दौरान यदि शिक्षार्थियों द्वारा बोली गई भाषा में कोई सुधार न दिखाई दे तो उन्हें हतोत्साह न करें। भली-भाँति निदेशित ध्वनि अभ्यास शिक्षार्थियों में अवश्य सुधार लाएगा।

अभ्यास

टिप्पणी : (क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. शिक्षार्थी भाषा अधिगम में त्रुटियाँ क्यों करते हैं? कम से कम चार कारण बताइए।

   क) .....

   ख) .....

   ग) .....

   घ) .....

2. वाक् प्रक्रिया में प्रयुक्त अवयवों की सूची बनाइए।

   क) छ)

   ख) ज)

   ग) झ)

   घ) ञ)

   ङ) ट)

   च) ठ)

3. हम स्वर ध्वनियाँ कब उत्पन्न करते हैं?

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

4. संयुक्त स्वर क्या हैं? दो वाक्यों में उत्तर दीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

10.4 पठन त्रुटियाँ और उपचारी शिक्षण

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षार्थी अनेक प्रकार की पठन त्रुटियाँ करते हैं। आपको उन्हें निर्देशन और सहायता द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिए। जैसा कि आप जानते हैं, पठन अधिगम के लक्ष्य हैं :

- पठन द्वारा आनंद प्राप्ति में शिक्षार्थियों की सहायता करना।
- सूचना एकत्रित करने में उनका मार्गदर्शन करना और
- उन्हें भाषा प्रयोग के योग्य बनाना।

शिक्षार्थियों में कुछ सामान्य पठन त्रुटियाँ पाई जाती हैं। ये त्रुटियाँ हैं :

- शब्द, वाक्यांश और वाक्य के स्तर पर त्रुटियाँ।
- पूरे शब्द के स्थान पर अक्षरों को पढ़ना (इस पर पठन कौशल से संबंधित इकाई में विस्तार से चर्चा की जा चुकी है)
- विभिन्न ध्वनियों में विभेद न कर पाना।
- अश्रव्यता।
- धारा प्रवाहिता का अभाव और
- अशुद्ध उच्चारण

शिक्षार्थियों में पठन त्रुटियाँ मुख्यत: निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न होती है :

i) नेत्र संचलन के बारे में उचित प्रशिक्षण का अभाव;

ii) अपरिचित शब्द;

iii) रुचि का अभाव;

iv) पर्याप्त अभ्यास का अभाव; और

v) मातृभाषा का हस्तक्षेप।

आपके कुछ शिक्षार्थी ऐसे हो सकते हैं जिन्होंने अभी तक पढ़ना बिल्कुल नहीं सीखा होगा। आपके द्वारा अपनाई जाने वाली विधि शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप होनी चाहिए। पठन का शिक्षण बच्चों के लिए एक सतत प्रक्रिया होनी चाहिए। पठन त्रुटियों को दूर करने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखें :

i) नेत्र संचलन का उचित प्रशिक्षण देना।

ii) शब्दों की पहचान और पठन पर बल न देकर वाक्यांशों की पहचान और पठन पर बल देना। शब्दों को पृथक रूप से पढ़ना एक बुरी आदत बन सकती है जो अर्थग्रहण को प्रभावित करती है।

iii) प्रारंभिक अवस्था में पठन और उच्चारण की यान्त्रिकी को समझने के लिए बोलकर पढ़ने की आवश्यकता पर बल देने के पश्चात् उत्तम अर्थग्रहण कौशलों के विकास की दृष्टि से मौन पठन पर उपर्युक्त बल देना।

iv) उच्चारण और नए शब्दों के प्रयोग का मौलिक अभ्यास।

v) आदर्श पठन प्रस्तुत करना और शिक्षार्थियों को उसके अनुसार पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना। कठिन शब्दों की व्याख्या करना ताकि शिक्षार्थी पाठ्य-सामग्री को समझ सकें।

पर्याप्त मात्रा में पठन-सामग्री उपलब्ध कराके मौन पठन का अभ्यास कराना चाहिए। इसे आप स्वयं उपलब्ध करा सकते हैं अथवा पुस्तकालय या घर से प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रयोजन के लिए केवल पाठ्यपुस्तकें ही पर्याप्त नहीं हैं। बच्चों को कहानियों, कॉमिक्स, बच्चों की पत्रिकाओं इत्यादि के रूप में सम्पूरक सामग्री दी जानी चाहिए।

अभ्यास

टिप्पणी : (क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. शिक्षार्थियों द्वारा की गई पठन त्रुटियों की सूची बनाइए।

क) .....

ख) .....

ग) .....

घ) .....

च) .....

छ) .....

6. पठन त्रुटियों से संबंधित कारणों के सामने (✓) का निशान लगाइए।

क) नेत्र संचलन के उचित प्रशिक्षण का अभाव ( )

ख) मातृभाषा का हस्तक्षेप ( )

ग) अपरिचित और अज्ञात शब्द ( )

घ) जटिल वाक्य संरचना ( )

च) रुचि का अभाव ( )

छ) पर्याप्त अभ्यास का अभाव ( )

7. अपने शिक्षार्थियों द्वारा की गई पठन त्रुटियों को दूर करने के लिए आप किन दो प्रमुख बातों को ध्यान में रखेंगे?

क) .....

ख) .....

10.5 लेखन त्रुटियाँ और उपचारी शिक्षण

प्रारंभिक कक्षाओं में लेखन वस्तुत: प्रतिलेखन है। प्रतिलेखन और श्रुतलेख पाठ लिखित रचना का आधार बनते हैं। प्रतिलेखन का उद्देश्य सीखी गई बातों को शिक्षार्थियों की स्मृति में बनाए रखना है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि प्रारंभिक प्रतिलेखन अभ्यासों में कोई त्रुटि नहीं होनी चाहिए। यदि प्रारंभिक अवस्था में लिखित अभ्यासों में काफी त्रुटियाँ होती हैं तो इसका अर्थ है कि शिक्षण में कुछ दोष है।

शिक्षार्थियों में सामान्यत: पाई जाने वाली लेखन त्रुटियाँ हैं :

i) कुछ वर्णों को स्पष्ट रूप से नहीं लिखना जैसे व-ब- भ-म ध-घ इत्यादि;

ii) शब्द में वर्णों के बीच, पंक्ति में शब्दों के बीच और अनुच्छेद में पंक्तियों के बीच पर्याप्त दूरी न होना;

iii) आकार, दूरी और सीध में, विशेष रूप से रेखाओं की दिशा में एकरूपता न होना;

iv) लिखने की अत्यंत धीमी गति, और

v) पठन और लेखन का अपर्याप्त अभ्यास।

शिक्षक के नाते, आप इस प्रकार की त्रुटियों को दूर करने में शिक्षार्थियों की सहायता करें। आइए विचार करें कि श्रुतलेखन शिक्षार्थियों में लेखन त्रुटियों को दूर करने के लिए उपचारी शिक्षण प्रदान करने में किस प्रकार सहायता कर सकता है:

i) श्रुतलेखन सुनने और अर्थग्रहण के लिए एक अच्छा अभ्यास है। इसमें बोले गए शब्द को सुनना और फिर उसे लिखना सम्मिलित होता है। इसके लिए बोली गई ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनने की आवश्यकता है। यह वर्तनी शिक्षण में भी सहायक है।

ii) गलतियों की भली-भाँति जाँच की जानी चाहिए क्योंकि ये शिक्षार्थियों में वर्तनी और वाक्यों एवं वाक्यांशों के प्रकारों को समझने की कमज़ोरी को दर्शाती हैं। समय-समय पर शिक्षार्थियों के समूह बनाने चाहिए ताकि धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों को विशेष और अतिरिक्त शिक्षण दिया जा सके। गलतियों के लिए शिक्षार्थियों को दंडित न करें अन्यथा उनका आत्मविश्वास प्रभावित हो सकता है। वैयक्तिक समस्याओं का निदान और उनका समाधान सहानुभूतिपूर्ण तरीके से करने का प्रयास करें।

iii) श्रुतलेखन अभ्यास का एक महत्त्वपूर्ण तत्व गति है। श्रुतलेख के लिए पाठ्यपुस्तक का कोई परिचित अनुच्छेद लें। अब इस अनुच्छेद को सावधानीपूर्वक पढ़ें और बच्चों को लिखने के लिए कहें। जब आप अनुच्छेद समाप्त कर लें तो उसे एक बार फिर पढ़े ताकि बच्चे लेखन में संशोधन कर सकें।

iv) शिक्षार्थियों की वर्तनी लिखने की क्षमता एक-दूसरे से भिन्न होती है। वैयक्तिक रूप से की गई त्रुटियों को वैयक्तिक रूप से संशोधित किया जाना चाहिए। प्रतिलेखन का पर्याप्त अभ्यास करवाएँ ताकि शिक्षार्थी शब्दों की पहचान कर पाएँ।

v) वर्तनी की त्रुटियों को कापी में सही करें और उन शब्दों को कई बार लिखने को कहें। वर्तनी की सामान्य त्रुटियों को सही करके श्यामपट्ट पर लिखा जा सकता है। आप शिक्षार्थियों को आपस में कापियाँ बदलकर वर्तनियों में संशोधन करने के लिए भी कह सकते हैं।

अभ्यास

टिप्पणी : (क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

8. शिक्षार्थियों द्वारा की जाने वाली कुछ सामान्य लेखन त्रुटियाँ लिखिए।

क) .....

ख) .....

ग) .....

घ) .....

ङ) .....

9. श्रुतलेखन में की गई लेखन त्रुटियों को आप कैसे सही करेंगे? उन्हें सही करने के कम से कम पाँच तरीके बताइए।

क) .....

ख) .....

ग) .....

घ) .....

ङ) .....

10.6 सारांश

इस इकाई में हमने विशेष रूप से प्रारंभिक स्तर पर भाषा में की गई त्रुटियों की चर्चा की है। इनमें उच्चारण त्रुटियाँ, पठन त्रुटियाँ और लेखन त्रुटियाँ शामिल हैं। त्रुटियों के प्रकारों के बारे में चर्चा के अतिरिक्त विभिन्न वाक् अवयवों, विभिन्न ध्वनि संबंधी प्रतीकों तथा स्वरों एवं संयुक्त स्वरों को कैसे उच्चरित करें, इन पर भी चर्चा की गई है। विभिन्न त्रुटियों के कारणों और इन त्रुटियों को दूर करने के तरीकों का भी वर्णन किया गया है ताकि आप बेहतर भाषा अधिगम के लिए शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन कर सकें।

10.7 इकाई के अंत में अभ्यास

1. वाक् प्रशिक्षण क्यों महत्त्वपूर्ण है? कारण बताइए।
2. शिक्षार्थियों को मौन पठन के लिए क्यों प्रोत्साहित करना चाहिए?
3. शिक्षार्थियों के वर्तनी दोष सुधारने के कम से कम तीन उपाय बताइए।
4. पठन त्रुटियों के क्या कारण हैं? आप इन्हें दूर करने में शिक्षार्थियों की किस प्रकार सहायता करेंगे?

10.8 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. क) प्रभावी उपागम का अभाव
   ख) पर्याप्त अभ्यास का अभाव
   ग) अभिप्रेरण का अभाव
   घ) मातृभाषा का हस्तक्षेप
2. क) नासिका मार्ग
   ख) कठोर तालु
   ग) दंत्य
   घ) तालव्य
   ङ) अग्रभाग
   च) जिह्वा का अग्रिम भाग
   छ) फलक
   ज) जिह्वा का मध्य भाग
   झ) जिह्वा का पिछला भाग
   ञ) होंठ
   ट) वाक् तंतु
   ठ) ग्रसनी
3. स्वर ध्वनियों का निर्माण तब होता है जब हमारे वाक् तंतुओं में कंपन होता है और उनके माध्यम से वायु गुजर जाती है।
4. जब कोई ध्वनि एक स्वर से प्रारंभ होकर अन्य स्वर की दिशा में जाती है या समाप्त होती है तब उस ध्वनि को संयुक्ताक्षर कहते हैं।
5. i) शब्द, वाक्यांश या वाक्य के स्तर पर गलतियाँ

ii) पूर्ण शब्द के स्थान पर वर्णों को पढ़ना

iii) भिन्न-भिन्न ध्वनियों में विभेद करने की योग्यता

iv) अश्रव्यता

v) धारा प्रवाहिता का अभाव

vi) अशुद्ध विराम-चिह्न

6. i) (✓)

ii) (✓)

iii) (✓)

iv) (×)

v) (✓)

vi) (✓)

7. i) नेत्र संचलन के लिए उचित प्रशिक्षण देना।

ii) उच्चारण तथा नये शब्दों के प्रयोग का पर्याप्त मौखिक अभ्यास।

8. क) कुछ वर्णों को स्पष्ट रूप से नहीं लिखा गया। उदाहरणत: ठ-द, म-भ, य-थ इत्यादि।

ख) शब्द में वर्णों के बीच, पंक्ति में शब्दों के बीच और अनुच्छेद के बीच उचित दूरी नहीं है।

ग) आकार, अक्षरों/शब्दों के बीच अंतराल और रेखाओं की दिशा में सीध पर ध्यान नहीं दिया गया है।

घ) लेखन गति बहुत धीमी है।

ङ) पठन एवं लेखन का अपर्याप्त अभ्यास।

9. क) श्रुतलेख एक ऐसी क्रिया है कि इसमें बोले गए शब्दों को सुनना और फिर उनको लिखना, दोनों ही सम्मिलित होते हैं। इसलिए लेखन त्रुटि को दूर करने के लिए पहले शब्द को शुद्ध बोलें, फिर उसे श्यामपट पर लिखें।

ख) गलतियों को पूर्णरूपेण जाँचना चाहिए तथा शिक्षार्थी की समस्याओं का व्यक्तिगत स्तर पर निदान करके उनका समाधान करना चाहिए। समय-समय पर शिक्षार्थियों के पुन: समूह बनाए जाने चाहिए ताकि मंदग्राही शिक्षार्थियों को विशेष व अतिरिक्त शिक्षण दिया जा सके।

ग) श्रुतलेख में गति एक महत्त्वपूर्ण कारक है। अत: श्रुतलेख के लिए पाठ्यवस्तु से कोई परिचित अनुच्छेद लें। अनुच्छेद का सावधानी से सस्वर वाचन करें और फिर शिक्षार्थियों को उसे लिखने के लिए कहें।

घ) प्रत्येक शिक्षार्थी में वर्तनी-योग्यता भिन्न-भिन्न होती है। अत: उनके द्वारा की गई गलतियों को वैयक्तिक स्तर पर सुधारना चाहिए। उन्हें शब्दों से परिचित कराने के लिए अनुलेखन का पर्याप्त अभ्यास कराएँ।

ङ) वर्तनी की गलतियों को कापी में सुधारें और शब्दों को अनेक बार लिखवाएँ।